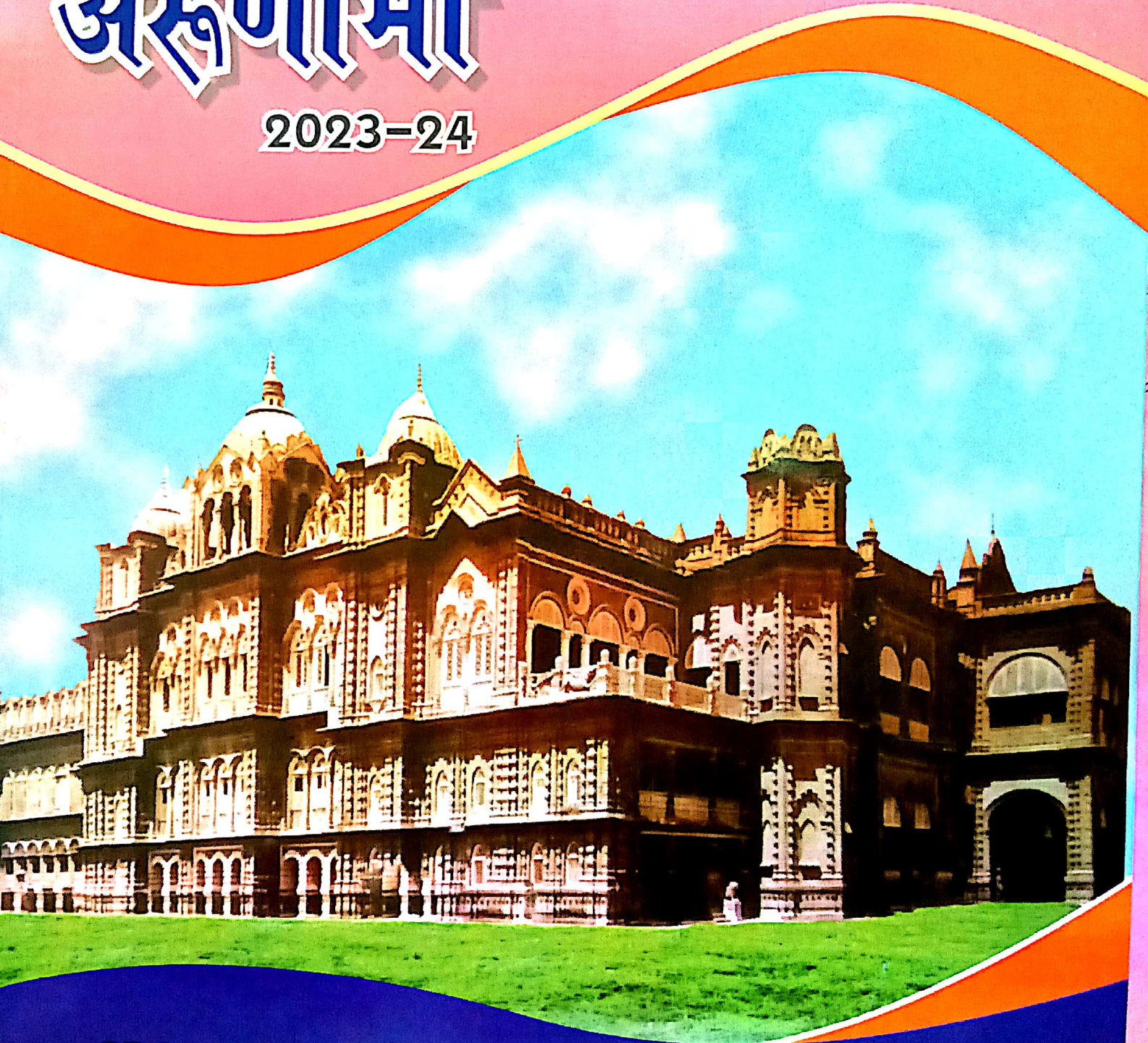




रोजगार विशेषांक
महारानी लाल कुँवरि पोस्ट ग्रेजुएट कालेज
बलरामपुर (उ०प्र०)

अरुणाभा

2023-24



M.L.K. POST GRADUATE COLLEGE
BALRAMPUR (U.P.)



महारानी लाल कुँवरि पोस्ट ग्रेजुएट कालेज बलरामपुर (उ०प्र०)

Email : mlk.college1955@gmail.com
website : www.mlkcollege.ac.in



प्रकाशक/संरक्षक

प्रो. जनार्दन प्रसाद पाण्डेय

प्राचार्य

संपादक मण्डल

प्रधान संपादक

प्रो. श्रीप्रकाश मिश्र

बी.एड. विभाग

सम्पादक

मो. तारिक कबीर

उर्दू विभाग

डॉ. रमेश कुमार शुक्ल

अंग्रेजी विभाग

डॉ. ऋषि रंजन पाण्डेय

रसायन विज्ञान विभाग

प्रो. विमल प्रकाश वर्मा

हिन्दी विभाग

डॉ. अनामिका सिंह

समाजशास्त्र विभाग

कु. नंदिनी शुक्ला

एम.ए., प्रथम वर्ष, हिन्दी

विद्याराम विश्वकर्मा

एम.ए. द्वितीय वर्ष, अंग्रेजी

1. "अरुणाभा" पत्रिका में व्यक्त विचारों, संकल्पनाओं एवं रचनाओं के प्रति संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है और न ही सम्पादक की कोई जिम्मेदारी है।
2. प्रथम कवर पृष्ठ : महाविद्यालय परिसर में अवस्थित सिटी पैलेस
2. अंतिम कवर पृष्ठ : महाविद्यालय परिसर में स्थित स्व० महाराजा सर दिग्विजय सिंह का स्टेच्यू हॉल



अनुक्रमणिका

क्र.सं. लेख/कृतियाँ	लेखक	पृष्ठ संख्या
1. सरस्वती वन्दना		I
2. महाविद्यालय कुलगीत		II
3. Vision & Mission		III
4. संपादकीय अभिवंदन	प्रो. श्रीप्रकाश मिश्र	IV-V
5. प्राचार्य की कलम से	प्रो. जे.पी. पाण्डेय	VI-VII
6. भारतीय ज्ञान-परंपरा के मूलाधार-वेद	प्रो. प्रकाश चन्द्र गिरि	1-5
7. कबीर का स्वप्न	प्रो. चन्द्रेश्वर	6-11
8. वैदिक दर्शन और क्वांटम यांत्रिकी	डॉ. सुनील कुमार मिश्र एवं अभिजीत पाण्डेय	12-14
9. सांस्कृतिक काव्य की महत्ता एवं श्लोकों में.....	डॉ. राज कुमार चौहान	15-16
10. लोक संस्कृति पर आधारित गीतों में भाव-सुषमा	डॉ. सुधांशु कुमार श्रीवास्तव	17-18
11. गणित का विशेष क्षेत्र	प्रो. वीणा सिंह	19-20
12. बी.एस-सी. जूलॉजी और पोस्ट ग्रेजुएशन.....	प्रो. अशोक कुमार	21-28
13. बी.एस-सी. वनस्पति विज्ञान के बाद कैरियर.....	डॉ. राजीव रंजन	29-32
14. बीज प्रौद्योगिकी का परिचय	डॉ. राजन प्रताप सिंह	33-34
15. संस्कृत भाषा के द्वारा रोजगार के अवसर	डॉ. अवनीन्द्र कुमार दीक्षित	35-39
16. हिन्दी विषय में रोजगार के अवसर	प्रो. प्रकाश चन्द्र गिरि	40-41
17. उर्दू भाषा एवं साहित्य में रोजगार के अवसर	श्री तारिक कबीर	42-44
18. बी.बी.ए. में रोजगार के अवसर	श्री राहुल विसेन	45
19. वाणिज्य विषय में रोजगार के अवसर	डॉ. एस.के. त्रिपाठी	46-49
20. भूगोल का विषय क्षेत्र	प्रो. सर्वेश्वर नाथ सिंह	50-51
21. भूगोल विषय में रोजगार के अवसर	प्रो. रेखा विश्वकर्मा	52-53
✓22. उच्च शिक्षा स्तर पर शिक्षाशास्त्र विषय	डॉ. विशाल गुप्ता	54-56
23. समाजशास्त्र में रोजगार की संभावनाएँ	डॉ. अनामिका सिंह	57
24. मनोविज्ञान में रोजगार के अवसर	डॉ. स्वदेश भट्ट	58-60
25. गृह विज्ञान में रोजगार के अवसर	डॉ. शकुन्तला सिंह	61-63
26. शिक्षक-शिक्षा पाठ्यक्रम (बी.एड.) एवं रोजगार	प्रो. राघवेन्द्र सिंह	64-65
27. व्यावसायिक/रोजगार परक कौशल : एक दृष्टि	प्रो. श्रीप्रकाश मिश्र	66-68
28. राजनीति विज्ञान के द्वारा रोजगार के अवसर	श्री दिनेश कुमार	69-70
29. अर्थशास्त्र के क्षेत्र में कैसे बनायें कैरियर	श्री शिवानन्द पाण्डेय	71
30. जीवन का अनुशासन-कैरियर का आधार:एन.सी.सी.	लेफ्टि. (डॉ.) देवेन्द्र कुमार चौहान	72
31. महाविद्यालय में उत्तर प्रदेश भारत स्काउट एवं गाइड (रोवर्स/रेंजर्स) का औचित्य एवं प्रभाव	डॉ. वन्दना सिंह एवं डॉ. एस.के. त्रिपाठी	73-78

उच्च शिक्षा स्तर पर शिक्षाशास्त्र विषय



डॉ० विशाल गुप्ता
अतिथि प्रवक्ता,
शिक्षाशास्त्र विभाग

उच्च शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के बीच प्रायः यह प्रश्न काफी सामान्य होता है कि स्नातक स्तर पर किन विषयों का चयन उनके भविष्य निर्माण के मार्ग में फलदाई होगा और यदि वे उच्च शिक्षा के मार्ग पर आगे बढ़कर अनुसंधान कार्य करना चाहें तो छात्र-छात्रा को किस विषय से अपने अनुसंधान कार्य में शिक्षण एवं शोध विषय पर एक अच्छी विशेषज्ञता प्राप्त करने में सहायता मिलेगी। स्नातक स्तर के विद्यार्थी के लिए यह प्रश्न कि किस विषय का चयन उपयुक्त होगा न सिर्फ स्वाभाविक है अपितु वांछित भी है।

जब कोई विद्यार्थी अपनी माध्यमिक शिक्षा पूरी करके किसी महाविद्यालय में प्रवेश लेता है तब उसे कौन से विषयों का चयन करना चाहिए विशेषकर जब वह विद्यार्थी कला या फिर भाषा संकाय का हो क्योंकि कला वर्ग में उपलब्ध विषयों के विकल्प विज्ञान या भाषा वर्ग की तुलना में कहीं अधिक होते हैं। कला संकाय में इन सभी उपलब्ध विषयों में खासा लोकप्रिय विषयों में से एक शिक्षाशास्त्र एक लंबे समय से नवांगतुक स्नातक छात्र-छात्राओं के बीच एक पसंदीदा विषय के रूप में अपनी जगह बनाये हुए है। आइए जानते हैं स्नातक एवं परास्नातक स्तर पर शिक्षाशास्त्र विषय की उपयोगिता, महत्व एवं प्रासंगिकता जो शिक्षाशास्त्र विषय को आज के दौर में भी युवक एवं युवतियों की पसंदीदा विषयों में से एक बनाते हैं।

1. मनोवैज्ञानिक शिक्षण विधियां एवं व्यवहारिक शिक्षण सिद्धान्तों के कारण शिक्षाशास्त्र विषय को समझने में सहजता एवं सरलता।
2. भारत के शिक्षा व्यवस्था के ऐतिहासिक विकास क्रम का बोध कराता भारत के गौरवशाली गुरुकुल शिक्षा से आज के राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली तक की समग्र यात्रा का चित्र प्रस्तुत करता। शिक्षाशास्त्र विषय का विषय क्षेत्र।
3. शिक्षण कार्य करने हेतु आधारभूत, व्यवहारिक एवं क्रियात्मक पृष्ठभूमि के निर्माण हेतु एक उपयोगी विषय के रूप में लोकप्रिय है।
4. कला वर्ग के ही अन्य विषयों यथा समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान, इतिहास, लोक प्रशासन, दर्शनशास्त्र इत्यादि के साथ सह संबंधित पाठ्यक्रम।
5. शिक्षण अभिव्यक्ति, शिक्षण कौशल एवं अधिगम सिद्धांतों के साथ कई प्रकार के मनोवैज्ञानिक शिक्षण सिद्धांतों एवं मानव व्यवहारों को व्याख्यायित करता इसका विषय क्षेत्र।
6. शोध एवं अनुसंधान गत प्रविधियाँ एवं नवीन प्रवृत्तियों को व्याख्यायित करने के कारण परास्नातक स्तर पर खासा लोकप्रिय विषय।

व्यवसायिक शिक्षा एवं शिक्षाशास्त्र:-

आज का युग उद्यमिता का युग है। शिक्षित होकर प्रत्येक व्यक्ति आत्मनिर्भर होना चाहता है और कर्मोवेश शिक्षा का भविष्यगामी लक्ष्य भी आत्मनिर्भरता की प्राप्ति है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की

संकल्पना भी व्यवसायिक शिक्षा पाठ्यक्रम के माध्यम से कौशलों का विकास कर उद्यम प्रधान व्यवसायिकता पर जोर देती है।

कौशलों के निर्माण एवं उनके विकास की दिशा में इन व्यवसायिक पाठ्यक्रमों में भी पर्याप्त विभिन्नता रखी गई है। कुछ एक पाठ्यक्रम शिक्षण वृत्ति से भी संबंधित हैं जैसे मूल्य शिक्षा। मूल्य की शिक्षा की अवधारणा जीवन कौशल से संबंधित है और साथ ही शिक्षाशास्त्र विषय के परास्नातक पाठ्यक्रम में उपलब्ध प्रश्नपत्रों में से एक है।

इस प्रकार शिक्षाशास्त्र विषय में उपलब्ध प्रश्नपत्रों में से कई आज के युग में व्यवसायिक योग्यता के विकास हेतु न सिर्फ महत्वपूर्ण बल्कि प्रासंगिक भी हैं। इस प्रकार हम पाते हैं कि शिक्षाशास्त्र विषय के विद्यार्थी में व्यवसायिक दृष्टिकोण एवं नैतिकता का विकास स्वतः ही हो जाता है और सिर्फ मूल्य शिक्षा ही नहीं अपितु कुछ अन्य प्रश्नपत्र भी शिक्षा की तकनीक के प्रयोग तक विस्तृत है। इसी प्रकार शिक्षाशास्त्र विषय की व्यवसायिक विषयों की तरह उपयोगिता अग्र बिंदुओं में निम्नवत् है—

1. राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (एन.टी.ए.) द्वारा आयोजित राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट) एवं शोध अध्येता छात्रवृत्ति (रिसर्च फेलोशिप इन एजुकेशन) के लिए एम.एड (निष्णात शिक्षाशास्त्र) एवं एम.ए. शिक्षाशास्त्र को सामान्य मान्यता प्राप्त है। जिस कारण स्नातकोत्तर शिक्षाशास्त्र का विद्यार्थी एम. एड. के विद्यार्थी के समक्ष माना जाता है और सामान्य आकांक्षा स्तर के साथ पूरे परिश्रम व लगन से शिक्षाशास्त्र विषय का अध्ययन कर विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा में सहायक प्राध्यापक (असि. प्रोफेसर) के पदों पर नियुक्ति पा सकता है।
2. राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट) प्रथम प्रश्न पत्र शिक्षण एवं शोध अभियोग्यता सभी दस इकाई के पाठ्यक्रम में इकाई संख्या एक शिक्षण अभिक्षमता इकाई संख्या दो शोध अभियोग्यता इकाई संख्या दस उच्च शिक्षा प्रणाली का शिक्षाशास्त्र विषय के पाठ्यक्रम से समाहित होना, शिक्षाशास्त्र विषय को छात्र-छात्राओं के बीच काफी लोकप्रिय बना देता है।
3. शिक्षा सेवा चयन आयोग द्वारा आयोजित विज्ञान संख्या 51 असि. प्रोफेसर भर्ती परीक्षा में बी.एड. संवर्ग एवं शिक्षाशास्त्र संवर्ग दोनों में शिक्षाशास्त्र स्नातकोत्तर अथवा एम.एड. के साथ नेट शिक्षाशास्त्र को शामिल कर लेने से शिक्षाशास्त्र काफी चर्चित विषय बन गया है।
4. शिक्षाशास्त्र में अनिवार्य प्रश्न पत्र भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं चुनौतियां के अन्तर्गत न सिर्फ भारतीय शिक्षा प्रणाली के वर्तमान स्वरूप बल्कि साथ ही साथ भारत के गौरवशाली इतिहास संस्कृति सभ्यता यहाँ तक कि विभिन्न सामाजिक सुधारों को भी पढ़ने के अवसर मिलने के कारण आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में शिक्षाशास्त्र प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में एक सहायक विषय के रूप में वरीयता मान विषयों में से एक है।
5. यह एक सर्वविदित सत्य है कि किसी भी देश समाज व समुदाय की जीवन रेखा उसके अपने सभ्यता संस्कृति एवं भाषा से होती है और शिक्षा न सिर्फ इन्हें जीवंत बनाती है बल्कि इन्हें नई पीढ़ी तक हस्तान्तरित भी करती है। ऐसे में शिक्षाशास्त्र विषय में स्नातक स्तर से ही शिक्षा के सामाजिक आधार, शिक्षा के समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण एवं शैक्षिक समाजशास्त्र जैसे प्रश्न पत्र पर शिक्षाशास्त्र विषय के सामाजिक सरोकारों को विस्तृत आयाम प्रदान करते हैं जो कि इस विषय को और भी अधिक संजीदा एवं सजग बनाता है।

6. किसी देश के योग्य एवं कुशल श्रमिकों का निर्माण उस देश के उन्नत तकनीक न्यायपूर्ण एवं त्वरित प्रशासन और उन नियमों एवं आदेशों के कुशल क्रियान्वयन पर आश्रित होता है जिसे उस देश के संविधान द्वारा प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग से उस देश की संसद अधिसूचित करती है। शिक्षाशास्त्र विषय में देश और समाज के संदर्भ में शिक्षा के राजनीतिक परिप्रेक्ष्य न सिर्फ देश के संविधान एवं शासन प्रणाली की जानकारी प्रदान करती है बल्कि साथ ही साथ उन कानूनों के निर्माण उनके प्रमापीकरण व उन कानूनों के व्यावहारिक प्रतिमानों का भी व्यवहारिक ज्ञान प्रदान करती है शायद इसीलिए आज शिक्षाशास्त्र विषय का विद्यार्थी एक सभ्य एवं शिक्षित नागरिक की भूमिका का भी निर्वहन बड़ी कुशलता से करता है।

7. आज के गला काट प्रतिस्पर्धा के युग में यदि कोई विद्यार्थी अध्यापन के क्षेत्र में अपना भविष्य निर्माण करना चाहता है और वह किन्हीं कारणों से अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान में प्रवेश ले पाने में असमर्थ है तो वह यदि स्नातक स्तर पर शिक्षाशास्त्र विषय का अध्ययन करता है तो उसे शिक्षण अधिगम के बुनियादी सिद्धांतों का न सिर्फ ज्ञान हो जाएगा अपितु वह उनके प्रयोग से भी परिचित हो जाएगा और शायद इसीलिए स्नातक स्तर पर शिक्षाशास्त्र विषय उन विषयों में से है जिसमें प्रवेश हेतु सर्वाधिक आवेदन प्राप्त होते हैं।

8. आज का युग उद्यमिता का युग है। हमारी शिक्षा प्रणाली भी आत्मनिर्भरता की प्राप्ति हेतु सर्वांगीण विकास की कल्पना से ओत प्रोत है उद्यमिता का युग प्रबंधकीय योग्यता एवं प्रशासनिक सूझबूझ से घनिष्ठ रूप से संबंधित है। शिक्षाशास्त्र विषय का प्रश्नपत्र शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबंधन न सिर्फ प्रबंधकीय एवं प्रशासनिक ज्ञान प्रदान करता है बल्कि इसका प्रयोग करके शिक्षाशास्त्र विषय का विद्यार्थी किसी व्यावसायिक प्रतिष्ठान, किसी स्वयंसेवी संस्था अथवा किसी शिक्षण संस्था के प्रबंधकीय संचालन में अपनी कुशल क्षमताओं के द्वारा अपने जीवकोपार्जन क्षमताओं में अभिवृद्धि भी करता है। शायद इसी कारण से विद्यार्थी प्रायः किसी न किसी शिक्षण संस्था से जुड़कर न सिर्फ अपना जीवन निर्वाह कर रहे होते हैं बल्कि साथ ही साथ समाज एवं समुदाय की आवश्यकताओं में अपनी भूमिका का निर्वाह कर रहे होते हैं।

इस प्रकार ऐसे ही अनेक कारण हैं जिनकी वजह से शिक्षाशास्त्र विषय आज के छात्र-छात्राओं में न सिर्फ लोकप्रिय विषय के रूप में प्रतिष्ठित है अपितु साथ ही साथ उचित शैक्षणिक मार्गदर्शन में भी बहुत ही उपयोगी विषय क्षेत्र के रूप में प्रतिस्थापित है।

शिक्षाशास्त्र विषय और एम.एल.के.पी.जी. कॉलेज बलरामपुर:-

तराई के ऑक्सफोर्ड के रूप में विख्यात एवं वर्ष 1955 में स्थापित महारानी लाल कुँवरि महाविद्यालय ने अपने स्थापना वर्ष से ही कला संकाय के अन्तर्गत स्नातक स्तर पर शिक्षाशास्त्र विषय का विकल्प छात्र-छात्राओं का उपलब्ध करवाया है और शैक्षिक वर्ष 2018-2019 में वर्तमान प्राचार्य प्रोफेसर श्री जनार्दन प्रसाद पाण्डेय जी एवं विभागाध्यक्ष शिक्षाशास्त्र डॉ० दिनेश कुमार मौर्या सर के भागीरथी प्रयासों द्वारा परास्नातक स्तर पर शिक्षाशास्त्र विषय का अनुमोदन विश्वविद्यालय से प्राप्त हुआ और 2018 से ही शिक्षाशास्त्र विभाग स्नातक स्तर के साथ ही साथ परास्नातक स्तर पर भी शिक्षाशास्त्र विषय का एक बहुत ही उन्नत, सक्षम एवं संसाधनपूर्ण विभाग के रूप में कार्यरत है इसके लिए शिक्षाशास्त्र विभाग महाविद्यालय प्रबंध समिति, प्राचार्य जी एवं विश्वविद्यालय प्रशासन का आभार व्यक्त करता है।